हनुमान
चालीसा
भाषाटीका

श्री हनुमान-चालीसा

सरल भाषा-टीका, प्रभावशाली तान्त्रिक हनुमद्-यन्त्र एवं पूजन-विधान, संकटमोचन-हनुमानाष्टक, बजरंग बाण, हनुमान-साठिका, हनुमान जी की आरती, हनुमत्-स्तवन, सिद्ध सम्पुट-मन्त्र आदि सहित ।

सम्पादक :

व्याकरणाचार्य-साहित्यवारिधि-तन्त्ररत्नाकर

आचार्य पण्डित शिवदत्त मिश्र शास्त्री

प्रकाशक :

श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार

कचौड़ीगली, वाराणसी-२२१००१

सन् २००४ ई०] ☐ २३९२५४३, २३९२५७१ [मूल्य : ८/-

तान्त्रिक हनुमद्-यन्त्र

पूजन विधान

पाठकर्ता को चाहिए कि, प्रातःकाल स्नान आदि नित्य-क्रिया से निवृत्त होकर कुशा आदि के पवित्र आसन पर पूरब की तरफ मुख करके बैठे। तत्पश्चात् *'ॐ केशवाय नमः, ॐ नारायणाय नमः, ॐ माधवाय नमः'* इस मन्त्र से तीन बार आचमन करें, और प्राणायाम करके, पुनः निम्नलिखित मन्त्र को पढ़कर पूजन-सामग्री पर और अपने ऊपर जल छिड़कें–

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ।।

तदनन्तर अपने सामने हनुमान् जी की मूर्ति या फोटो एवं प्रस्तुत हनुमद्-यन्त्र (भोजपत्र पर लिखकर या ताम्रपत्र पर खुदवा कर) रखें तथा सिन्दूर, चावल, धूप, दीप, लाल पुष्प से पूजन करें । पश्चात् यथाशक्ति मोतीचूर और बेसन के लड्डू एवं रोट आदि का भोग लगावें और हाथ में पुष्प लेकर नीचे लिखे श्लोक पढ़कर हनुमान् जी की प्रार्थना करें ।

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ।।

तत्पश्चात् पुष्प समर्पण करके हनुमान-चालीसा का पाठ करें । पाठ करने के बाद रुद्राक्ष की माला या तुलसी की माला से '*हं हनुमते रुद्रात्मकाय हुँ फट्*' मन्त्र का १०८ बार नित्यप्रति जप करें। इससे पाठकर्ता की समस्त मनोकामनाएँ पूरी होती हैं ।

ध्यानम्

अतुलित-बलधामं स्वर्णशैलाभदेहं,
दनुजवन-कृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।
सकलगुण-निधानं वानराणामधीशं,
रघुपतिवरदूतं वातजातं नमामि ।।

।। श्रीहनुमते नमः।।

श्री हनुमान-चालीसा

दोहा–श्री गुरु चरण सरोज रज, निज मन मुकुरु सुधारि ।
बरनउँ रघुबर विमल जसु, जो दायकु फल चारि ॥

श्री गुरु महाराज के चरण-कमलों की धूलि से अपने मानस रूपी दर्पण को पवित्र करके श्री रघुवीर के उस निर्मल कीर्ति का वर्णन करता हूँ, जो चारों फल (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) को देने वाला है।

बुद्धिहीन तनु जानि के, सुमिरौं पवन-कुमार ।
बल बुधि विद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस बिकार ॥

हे पवनपुत्र ! मैं आपका स्मरण-वन्दन करता हूँ। आप तो जानते ही हैं कि, मेरा शरीर और बुद्धि निर्बल है। आप मुझे शारीरिक बल, सद्बुद्धि एवं ज्ञान प्रदान करें और मेरे समस्त दुःखों तथा दोषों का शमन कर दीजिए।

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुनसागर ।
जय कपीश तिहुँ लोक उजागर ।।

श्री हनुमान जी ! आपकी जय हो। आपका ज्ञान एवं गुण अथाह है। हे कपीश्वर ! आपकी जय हो। तीनों लोकों (स्वर्ग-लोक, पृथ्वी-लोक और पाताल-लोक) में आपकी कीर्ति फैली है ।

रामदूत अतुलित बलधामा ।
अंजनि पुत्र पवनसुत नामा ।।

हे पवनसुत अञ्जनीनन्दन ! श्रीरामदूत ! आपके समान जगत् में कोई दूसरा बलवान् नहीं है ।

महाबीर बिक्रम बजरंगी।
कुमति निवार सुमति के संगी॥

हे महावीर बजरंगबली ! आप विशेष पराक्रम वाले हैं। आप भक्तों के अमङ्गलकारी बुद्धि को दूर करें तथा उनमें अच्छी सद्-बुद्धि प्रदान करने हेतु उनके सहायक बनते हैं।

कञ्चन बरन बिराज सुबेसा।
कानन कुण्डल कुञ्चित केसा॥

आप स्वर्ण के सदृश सुनहले रंग, सुन्दर वस्त्र-आभूषणों से सुसज्जित, कानों में कुण्डल और घुँघराले बालों से सुशोभित हैं।

हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै ।
काँधे मूँज जनेऊ साजै ।।

आपके हाथ में वज्र और ध्वजा है और कन्धे पर मूँज-निर्मित जनेऊ शोभायमान है ।

शङ्कर-सुवन केसरी-नन्दन ।
तेज प्रताप महा जग-वन्दन ।।

हे शंकर के अवतार ! हे केसरी-नन्दन ! आपके शौर्य और महान् यश की संसार-भर में वन्दना होती है ।

विद्यावान गुणी अति चातुर ।
राम काज करिबे को आतुर ।।

आप विद्वत्ता, गुणवत्ता और कार्यकुशलता से युक्त होकर रामचन्द्र जी के काज करने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं ।

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया ।
राम लखन सीता मन बसिया ।।

आप श्रीरामचरित सुनने में आनन्दित होते हैं । श्रीराम, सीता और लक्ष्मण का आपके हृदय में निवास है ।

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा ।
बिकट रूप धरि लङ्क जरावा ।।

आपने अपना बहुत छोटा रूप धारण करके सीताजी को दिखलाया और भयंकर रूप बनाकर लंका को जलाया ।

भीम रूप धरि असुर सँहारे।
रामचन्द्र के काज सँवारे।।

आपने विकराल रूप धारण करके राक्षसों का नाश किया और श्रीरामचन्द्र जी के उद्देश्यों को सफल बनाया।

लाय सजीवन लखन जियाये।
श्री रघुबीर हरषि उर लाये।।

आपने संजीवनी बूटी लाकर लक्ष्मण जी को पुनर्जीवित किया। जिससे रघुनाथजी ने हर्षित होकर आपको हृदय से लगा लिया।

रघुपति कीन्हीं बहुत बड़ाई ।
तुम मम प्रिय भरत सम भाई ।।

श्रीरामचन्द्रजी ने आपकी भूरि-भूरि प्रशंसा की और कहा कि, तुम हमारे भाई भरत के समान प्यारे हो ।

सहस बदन तुम्हरो यश गावैं ।
अस कहि श्रीपति कण्ठ लगावैं ।।

श्रीराम ने आपको यह कहकर अपने हृदय से लगा लिया कि, तुम्हारा यश सहस्र (हजार) मुख से सराहनीय है ।

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा ।
नारद शारद सहित अहीसा ।।

श्रीसनक, श्रीसनातन, श्रीसनन्दन, श्रीसनत्कुमार आदि मुनि, ब्रह्मा आदि देवता, नारदजी, सरस्वतीजी, शेषनाग जी ।

यम कुबेर दिगपाल जहाँ ते ।
कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते ।।

यमराज, कुबेर आदि, सब दिशाओं के रक्षक, कवि, विद्वान्, पण्डित या कोई भी आपके यश का पूर्णरूप से वर्णन नहीं कर सकते ।

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा ।
राम मिलाय राजपद दीन्हा ।।

आपने राज्य से निर्वासित सुग्रीवजी को श्रीराम से मिलाकर उनका उपकार किया, जिसके कारण वे पुनः राजा बने ।

तुम्हरो मन्त्र विभीषण माना।
लंकेश्वर भये सब जग जाना॥

आपके उपदेश का विभीषणजी ने पालन किया, जिससे वे लंका के राजा बने, इसको सब संसार जानता है।

जुग सहस्त्र योजन पर भानू।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू॥

जो सूर्य देव इतने योजन की दूरी पर हैं कि उन पर पहुँचने के लिए हजार युग लगें। उन हजारों योजन की दूरी पर स्थित सूर्य देव को भी आपने एक मीठा फल समझकर निगल लिया।

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं ।
जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ।।

आपने श्रीरामचन्द्रजी की दी हुई अँगूठी मुँह में रखकर समुद्र को लाँघ लिया । इसमें कोई आश्चर्य नहीं है ।

दुर्गम काज जगत के जेते ।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ।।

संसार में जितने भी कठिन-से-कठिन कार्य हों, वे सब आपकी कृपा से सहज हो जाते हैं ।

राम दुवारे तुम रखवारे ।
होत न आज्ञा बिनु पैसारे ।।

श्रीरामचन्द्रजी के द्वार के आप सजग प्रहरी हैं, जिसमें आपकी आज्ञा के बिना किसी को प्रवेश नहीं मिलता। श्रीराम-कृपा पाने के लिए आपकी प्रसन्नता आवश्यक है। (इस कारणं भी आपका अर्चन-पूजन अनिवार्य है)।

सब सुख लहै तुम्हारी सरना।
तुम रक्षक काहू को डरना॥

आपकी शरण में आनेवाला सभी सुखों का अधिकारी होता है और आप जिंसके रक्षक हैं, उसे किसी का डर नहीं रहता।

आपन तेज सम्हारो आपै।
तीनों लोक हाँक तें काँपै॥

आपकी तेजस्विता को आपके सिवाय कोई नहीं सँभाल सकता। आपकी गर्जना से त्रैलोक्य कम्पित हो जाते हैं।

भूत पिशाच निकट नहिं आवै।
महाबीर जब नाम सुनावै॥

जहाँ 'महाबीर' हनुमान् जी के नाम का कीर्तन होता है, वहाँ भूत-पिशाच पास भी नहीं फटक सकता।

नाशै रोग हरै सब पीरा।
जपत निरन्तर हनुमत बीरा॥

हे वीर हनुमान् जी! आपका निरन्तर जप करने से सब रोग नष्ट हो जाते हैं और सभी पीड़ाएँ मिट जाती हैं।

संकट तें हनुमान छुड़ावै ।
मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ।।

हे हनुमान् जी ! मन में विचारने, कर्म करने और बोलने में जिनका ध्यान आप में रहता है, उनको सब कष्टों से आप मुक्त कर देते हैं ।

सब पर राम तपस्वी राजा ।
तिन के काज सकल तुम साजा ।।

तपस्वी राजा श्रीरामचन्द्रजी सबसे श्रेष्ठ हैं, उनके सब कार्यों को आपने सहज में ही पूरा कर दिया ।

और मनोरथ जो कोइ लावै ।
सोइ अमित जीवन फल पावै ।।

जिस पर आपकी कृपा हो, वह कोई भी अभिलाषा करे तो उसे ऐसा फल मिलता है, जिसकी जीवन में कोई सीमा नहीं होती ।

चारों जुग परताप तुम्हारा ।
है परसिद्ध जगत उजियारा ॥

चारों युगों (सतयुग, द्वापर, त्रेता तथा कलियुग) में आपके प्रताप का यशोगान हुआ है, जगत् में आपकी कीर्ति सर्वत्र प्रकाशमान है ।

साधु सन्त के तुम रखवारे ।
असुर निकन्दन राम दुलारे ॥

हे श्रीरामचन्द्र के परम प्रिय, आप सज्जनों की रक्षा और दुर्जनों का विनाश करते हैं ।

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता।
अस बर दीन जानकी माता ॥

आपको माता श्रीजानकीजी से ऐसा वरदान मिला हुआ है, जिससे आप किसी को भी आठों सिंद्धियाँ[1] और नवों निधियाँ[2] (सब प्रकार की सम्पत्ति) दे सकते हैं।

१– १. अणिमा–जिससे साधक किसी को दिखाई नहीं पड़ता और कठिन-से-कठिन पदार्थ में प्रवेश कर जाता है।

२. महिमा–जिसमें योगी अपने को बहुत बड़ा बना लेता है।

३. गरिमा–जिससे साधक अपने को चाहे जितना भारी बना लेता है।

४. लघिमा–जिससे जितना चाहे उतना हल्का बन जाता है।

५. प्राप्ति–जिससे इच्छित पदार्थ की प्राप्ति होती है।

राम रसायन तुम्हरे पासा।
सदा रहो रघुपति के दासा॥

आप निरन्तर श्री रघुनाथ जी की शरण में रहते हैं, जिससे आपके पास वृद्धत्व और असाध्य रोगों के नाश के लिए 'राम-नाम' औषधि है।

तुम्हरे भजन राम को भावै।
जन्म-जन्म के दुःख बिसरावै॥

---

६. प्राकाम्य–जिससे इच्छा करने पर वह पृथ्वी में अन्तर्हित हो सकता है, आकाश में उड़ सकता है।

७. ईशित्व–जिससे सब पर शासन करने का सामर्थ्य प्राप्त हो जाता है।

८. वशित्व–जिससे दूसरों को वशीभूत किया जाता है।

२– पद्म, महापद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील और बर्च आदि नव निधियाँ हैं।

आपका भजन करने से श्रीरामजी प्राप्त होते हैं और जन्म-जन्मान्तर के दुःखों का नाश होता है।

अन्तकाल रघुबरपुर जाई।
जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई॥

अन्त समय श्री रघुनाथ जी के धाम को जाते हैं और यदि फिर भी जन्म लेंगे तो भक्ति करेंगे तथा श्रीराम-भक्त कहलायेंगे।

और देवता चित्त न धरई।
हनुमत सेइ सर्ब सुख करई॥

हे हनुमानजी ! आपकी सेवा करने से सब प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं, फिर अन्य किसी देवता के उपासना की आवश्यकता नहीं रहती।

संकट कटै मिटै सब पीरा।
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥

हे वीर हनुमानजी ! जो आपका स्मरण करता रहता है, उसके सभी संकट कट जाते हैं और सभी पीड़ाएँ मिट जाती हैं ।

जय जय जय हनुमान गोसाईं।
कृपा करहु गुरुदेव की नाईं ॥

हे स्वामी हनुमानजी ! आपकी जय हो, जय हो, जय हो । आप मुझ पर कृपालु श्री गुरु जी के समान कृपा कीजिए ।

जो शत बार पाठ कर कोई।
छूटहिं बन्दि महा सुख होई ॥

जो कोई इस हनुमान-चालीसा का सौ बार पाठ करेगा, वह सब बन्धनों से छूट जायेगा और उसे परमानन्द की प्राप्ति होगी ।

जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा ।
होय सिद्ध साखी गौरीसा ।।

भगवान् शङ्कर ने यह हनुमान-चालीसा लिखवाया, इसलिए वे साक्षी हैं कि, जो कोई इसे पढ़ेगा उसे निश्चय ही सफलता प्राप्त होगी ।

तुलसीदास सदा हरि चेरा ।
कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ।।

हे नाथ हनुमानजी ! तुलसीदास सदा ही श्रीराम के दास हैं । इसलिए आप उनके हृदय में निवास कीजिए ।

दोहा

पवन-तनय संकट हरन,
मंगल मूरति रूप।
राम-लखन-सीता सहित,
हृदय बसहु सुरभूप॥

हे संकटमोचन पवनकुमार ! आपका आनन्ददायी मांगलिक स्वरूप है। हे देवराज ! आप श्रीराम, सीताजी और लक्ष्मण सहित मेरे हृदय में निवास कीजिए।

इति श्री हनुमान-चालीसा समाप्त।

3

सङ्कटमोचन हनुमानाष्टक

(मत्तगयन्द छन्द)

बाल समय रबि भक्षि लियो तब,
तीनहुँ लोक भयो अँधियारो ।
ताहि सों त्रास भयो जग को,
यह संकट काहु सों जात न टारो ।।
देवन आनि करी विनती तब,
छाँड़ि दियो रवि कष्ट निवारो ।

को नहिं जानत है जग में कपि,
संकट मोचन नाम तिहारो ।।

हे हनुमानजी ! जब आप बालक थे तभी आपने सूर्य को अपने मुँह का ग्रास बनाया, जिससे तीनों लोकों में अँधेरा छा गया । इससे संसार-भर में विपत्ति छा गयी और उस संकट को कोई भी दूर नहीं कर सका । देवताओं ने आकर जब आपकी विनती की, तो आपने सूर्य को मुक्त कर दिया । इस प्रकार संकट दूर हुआ । हे हनुमानजी ! संसार में ऐसा कौन है, जो आपका 'संकटमोचन' नाम नहीं जानता ।

बालि की त्रास कपीस बसै गिरि,
जात महाप्रभु पंथ निहारो ।

चौंकि महामुनि साप दियो तब,
चाहिय कौन बिचार बिचारो ।।
कै द्विज रूप लिवाय महाप्रभु,
सो तुम दास के शोक निवारो ।
को नहिं जानत है जग में कपि,
संकट मोचन नाम तिहारो ।।

बालि के डर से सुग्रीव पर्वत पर रहते थे । उन्होंने श्री रामचन्द्र को आते देखकर आपको पता लगाने के लिए भेजा । आपने अपना ब्राह्मण का रूप धारण कर श्रीरामचन्द्र से भेंट की और उनको अपने साथ लिवा लाये, जिससे आपने सुग्रीव के शोक का निवारण किया । हे हनुमान जी ! संसार में ऐसा कौन है, जो आपका 'संकटमोचन' नाम नहीं जानता ।

अङ्गद के संग लेन गये सिय,
खोज कपीस यह बैन उचारो ।
जीवत ना बचिहौ हम सों जु,
बिना सुधि लाये इहाँ पगु धारो ।।
हेरि थके तट सिन्धु सबै तब,
लाय सिया सुधि प्राण उबारो ।
को नहिं जानत है जग में कपि,
संकट मोचन नाम तिहारो ।।

सुग्रीव ने अगंद के साथ सीता जी की खोज के लिए अपनी सेना को

भेजते समय कह दिया था कि यदि सीताजी का पता लगाकर नहीं लाये तो हम तुम सबको मार डालेंगे। सब ढूँढ-ढूँढकर थक गये। तब आप समुद्र को लाँघकर सीताजी का पता लगा लाये, जिससे सबके प्राण बचे। हे हनुमान जी ! संसार में ऐसा कौन है, जो आपका 'संकटमोचन' नाम नहीं जानता।

रावण त्रास दई सिय को सब,
राक्षसि सों कहि शोक निवारो।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु,
जाय महा रजनीचर मारो ।।
चाहत सीय अशोक सों आगि सु,
दै प्रभु मुद्रिका शोक निवारो।

को नहिं जानत है जग में कपि,
संकट मोचन नाम तिहारो ।।

जब रावण ने श्रीसीताजी को भय दिखाया और कष्ट दिया एवं सब राक्षसियों से कहा कि, सीताजी को मनावें, हे महावीर हनुमान जी ! उस समय आपने पहुँचकर महान् राक्षसों को मारा । सीताजी ने अशोक वृक्ष से अग्नि माँगी (स्वयं को भस्म करने के लिए), परन्तु आपने उसी वृक्ष पर से श्रीरामचन्द्र जी की अँगूठी नीचे गिरा दी, जिससे सीताजी की चिन्ता दूर हुई । हे हनुमान जी ! संसार में ऐसा कौन है, जो आपका 'संकटमोचन' नाम नहीं जानता ।

बाण लग्यो उर लक्ष्मण के तब,
प्राण तजे सुत रावण मारो ।

लै गृह वैद्य सुषेन समेत,
तबै गिरि द्रोण सु वीर उपारो ।।
आनि सजीवन हाथ दई तब,
लक्ष्मण के तुम प्राण उबारो ।
को नहिं जानत है जग में कपि,
संकट मोचन नाम तिहारो ।।

रावण के पुत्र मेघनाद ने, जो बाण मारा वह लक्ष्मणजी की छाती में लगा और उससे उनके प्राण संकट में पड़ गये। तब आप ही लंका में जाकर सुषेण वैद्य को घर सहित उठा लाये और द्रोणाचल पर्वत सहित संजीवनी बूटी ले आये, जिससे लक्ष्मणजी के प्राण बच गये । हे हनुमान जी ! संसार में ऐसा कौन है, जो आपका 'संकटमोचन' नाम नहीं जानता ।

रावण युद्ध अजान कियो तब,
नाग कि फाँस सबै सिर डारो।
श्रीरघुनाथ समेत सबै दल,
मोह भयो यह संकट भारो।।
आनि खगेश तबै हनुमान जू,
बन्धन काटि सुत्रास निवारो।
को नहिं जानत है जग में कपि,
संकट मोचन नाम तिहारो।।

जब रावण ने युद्ध में सबको नागपाश से बाँध लिया और श्रीरघुनाथ

जी सहित दल के समस्त वीर मूर्छित हो गये, जिससे सभी सैनिकों पर भारी विपत्ति आ गयी, तब उसी समय हे हनुमान जी ! आपने गरुड़ जी को लाकर सबको नागपाश से मुक्त करा दिया। फलस्वरूप संकट दूर हुआ । हे हनुमान जी ! संसार में ऐसा कौन है कि, जो आपका 'संकटमोचन' नाम नहीं जानता ।

बन्धु समेत जबै अहिरावण,
ले रघुनाथ पताल सिधारो ।
देविहिं पूजि भली विधि सों बलि,
देव सबै मिलि मन्त्र बिचारो ।
जाय सहाय भयो तब ही,
अहिरावण सैन्य समेत सँहारो ।

को नहिं जानत है जग में कपि,
संकट मोचन नाम तिहारो ।।

जब अहिरावण श्री रघुनाथ जी को लक्ष्मण सहित पाताल में ले गया और भली-भाँति देवीजी की पूजा करके सबके परामर्श से यह निश्चय किया कि, इन दोनों भाइयों की बलि दूँगा, उसी समय आपने वहाँ पहुँचकर अहिरावण को उसकी सेना समेत मार डाला । हे हनुमान जी ! संसार में ऐसा कौन है, जो आपका 'संकटमोचन' नाम नहीं जानता ।

काज कियो बड़ देवन के तुम,
बीर महाप्रभु देखि बिचारो ।
कौन सो संकट मोर गरीब को,
जो तुमसों नहिं जात है टारो ।।

बेगि हरो हनुमान महाप्रभु,
जो कछु संकट होय हमारो ।।
को नहिं जानत है जग में कपि,
संकट मोचन नाम तिहारो ।।

हे महावीर ! आपने बड़े-बड़े देवों के कार्य सँवारे हैं। अब आप देखिए और सोचिए कि मुझ दीन-हीन का ऐसा कौन सा संकट है जिसको आप दूर नहीं कर सकते। हे महावीर हनुमान जी ! हमारा जो कुछ भी संकट हो आप उसे शीघ्र दूर कर दीजिए। हे हनुमान जी ! संसार में ऐसा कौन है, जो आपका 'संकटमोचन' नाम नहीं जानता।

दोहा

लाल देह लाली लसै, अरु धरि लाल लंगूर ।
बज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपि-शूर ।।
यह अष्टक हनुमान को, विरचित तुलसीदास ।
विनती शिवदत्त मिश्र की, पढ़ै, सुनै दुखनास ।।

आपका शरीर लाल है और आपकी पूँछ भी लाल है और आपने अपने शरीर पर लाल सिन्दूर धारण कर रखा है और आपके वस्त्र भी लाल हैं। आपका शरीर वज्र जैसा कठोर है और आप दुष्टों का नाश कर देते हैं। हे हनुमान जी ! आपकी जय हो, जय हो, जय हो ।

इति संकटमोचन हनुमानाष्टक सम्पूर्ण ।

श्रीहनुमानाष्टकम्

परम वन्दनीय अनन्त बलवन्त श्रीहनुमन्तलाल जी की, श्रीरामचरितमानस, पंचम सोपान सुन्दरकाण्ड के मंगलाचरण के तीसरे श्लोक में आठ विशेषणों में वन्दना की गयी है। यदि कम समय में हनुमानाष्टक का पाठ करना हो, तो प्रत्येक विशेषण के अन्त में 'नमामि' जोड़ देने से पाठ हनुमानाष्टक हो जायेगा।

हनुमानाष्टकम्

अतुलित-बलधामं नमामि ,
स्वर्णशैलाभदेहं नमामि ।
दनुज-बल-कृशानुं नमामि ,
ज्ञानिनामग्रगण्यं नमामि ।

सकल-गुण-निधानं नमामि,
वानराणामधीशं नमामि।
रघुपति-प्रिय-भक्तं नमामि,
वातजातं नमामि।

फलश्रुति–

इस रीति से ८, २८ या १०८ पाठ नित्य करने से पाठक-साधक सहज ही हनुमान जी का कृपा-पात्र बनकर हर, गौरी, राम, लक्ष्मण एवं जगज्जननी सीता जी का प्रिय पात्र बन जाता है। जीव का ब्रह्म से एवं ब्रह्म का जीव से सम्बन्धानुराग जोड़ने वाले केसरी-नन्दन ऐसे पाठक को सदैव संरक्षण प्रदान करते हैं।

इति हनुमानाष्टकं सम्पूर्णम्।

बजरंग बाण

दोहा

निश्चय प्रेम प्रतीति ते, विनय करैं सनमान ।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करैं हनुमान ।।

चौपाई

जय हनुमन्त सन्त हितकारी ।
सुनि लीजै प्रभु अरज हमारी ।।
जनके काज विलम्ब न कीजै ।
आतुर दौरि महा सुख दीजै ।।

जैसे कूदि सिन्धु महि पारा।
सुरसा बदन पैठि बिस्तारा।।
आगे जाइ लंकिनी रोका।
मारहु लात गई सुर लोका।।
जाय विभीषण को सुख दीन्हा।
सीता निरखि परमपद लीन्हा।।
बाग उजारि सिन्धु महँ बोरा।
अति आतुर यमकातर तोरा।।

अक्षय कुमार को मारि सँहारा।
लूम लपेटि लंक को जारा।।
लाह समान लंक जरि गई।
जय जय धुनि सुर पुर महँ भई।।
अब विलम्ब केहि कारन स्वामी।
कृपा करहु उर अन्तर्यामी।।
जंय जय लक्ष्मण प्राण के दाता।
आतुर होइ दुख करहु निपाता।।

जय गिरिधर जय-जय सुखसागर ।
सुर-समूह समरथ भट नागर ।।
ॐ हनु-हनु-हनु हनुमंत हठीले ।
बैरिहिं मारु वज्र की कीले ।।
गदा वज्र लै बैरिहिं मारो ।
महाराज प्रभु दास उबारो ।।
ॐकार हुँकार महाबीर धावो ।
वज्र गदा हनु बिलम्ब न लाव्रो ।।

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमंत कपीसा ।
ॐ हुँ हुँ हुँ हनु अरि उर शीशा ।।
सत्य होहु हरि शपथ पायके ।
राम दूत धरु मारु जायके ।।
जय-जय-जय हनुमंत अगाधा ।
दुख पावत जन केहि अपराधा ।।
पूजा जप तप नेम अचारा ।
नहिं जानत हैं दास तुम्हारा ।।

वन उपवन मग गिरिगृह माहीं ।
तुम्हरे बल हम डरपत नाहीं ।।
पाँय परौं कर जोरि मनावौं ।
यहि अवसर अब केहि गोहरावौं ।।
जय अञ्जनि कुमार बलवन्ता ।
शंकर सुवन वीर हनुमन्ता ।।
बदन कराल काल कुल घालक ।
राम सहाय सदा प्रति पालक ।।

भूत प्रेत पिशाच निशाचर ।
अग्नि बैताल काल मारीमर ।।
इन्हें मारु तोहिं सपथ राम की ।
राखु नाथ मरजाद नाम की ।।
जनक सुता हरिदास कहावो ।
ताकी सपथ बिलम्ब न लावो ।।
जय-जय-जय धुनि होत अकाशा ।
सुमिरत होत दुसह दुख नाशा ।।

चरण शरण कर जोरि मनावौं ।
यहि अवसर अब केहि गोहरावौं ।।
उठु-उठु चलु तोहिं राम दोहाई ।
पाँय परौं कर जोरि मनाई ।।
ॐ चं चं चं चं चपल चलन्ता ।
ॐ हनु हनु हनु हनु हनुमंता ।।
ॐ हं हं हाँक देत कपि चञ्चल ।
ॐ सं सं सहमि पराने खल दल ।।

अपने जन को तुरत उबारो।
सुमिरत होत आनन्द हमारो ।।
यहि बजरंग बाण जेहि मारे।
ताहि कहो फिर कौन उबारे ।।
पाठ करै बजरंग बाण की।
हनुमत रक्षा करैं प्राण की ।।
यह बजरंग बाण जो जापै।
तेहि ते भूत प्रेत सब काँपै ।।

धूप देय अरु जपै हमेशा।
ताके तनु नहिं रहे कलेशा॥

दोहा—

प्रेम प्रतीतिहिं कपि भजै, सदा धरैं उर ध्यान।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करैं हनुमान॥

इति श्रीगोस्वामीतुलसीदासजीकृत श्रीहनुमत्-बजरंगबाण समाप्त। □

हनुमान-साठिका

चौपाई

जय जय जय हनुमान अडंगी। महाबीर विक्रम बजरंगी॥
जय कपीश जय पवन कुमारा। जय जगबंदन शील अगारा॥

जय आदित्य अमर अविकारी। अरि मरदन जय-जय गिरधारी ।।
अंजनि उदर जन्म तुम लीन्हा। जय जयकार देवतन कीन्हा ।।
बाजै दुंदुभि गगन गभीरा। सुर मन हर्ष असुर मन पीरा ।।
कपि के डर गढ़ लंक सकानी। छूटी बंदि देवतन जानी ।।
ऋषि समूह निकट चलि आये। पवन तनय के पद शिर नाये ।।
बार-बार अस्तुति कर नाना। निर्मल नाम धरा हनुमाना ।।
सकल ऋषिन मिलि अस मत ठाना। दीन बताय लाल फल खाना ।।
सुनत वंचन कपि मन हर्षाना। रवि रथ उदय लाल फल जाना ।।
रथ समेत कपि कीन्ह अहारा। सूर्य बिना भये अति अँधियारा ।।
विनय तुम्हार करे अकुलाना। तब कपीस की अस्तुति ठाना ।।
सकल लोग वृत्तान्त सुनावा। चतुरानन तब रवि उगिलावा ।।

कहा बहोरि सुनो बलशीला । रामचन्द्र करिहैं बहु लीला ।।
तब तुम उनकर करब सहाई । अबहिं बसहु कानन महँ जाई ।।
अब कहि विधिनिज लोक सिधारे । मिले सखा संग पवन कुमारे ।।
खेलत खेल महा तरु तोरैं । ढेर करैं बहु पर्वत फोरैं ।।
जेहि गिरि चरण देहि कपि धाई । गिरि समेत पातालहिं जाई ।।
कपि सुग्रीव बालि की त्रासा । निरख रहे राम मगु आशा ।।
मिले राम तहँ पवन कुमारा । अति आनन्द सप्रेम दुलारा ।।
मणि मुदरी रघुपति सों पाई । सीता खोज चले शिर नाई ।।
शत योजन जलनिधि विस्तारा । अगम अपार देवतन हारा ।।
जिमिसुर गोखुर सरिस कपीशा । लाँघि गये कपि कहि जगदीशा ।।
सीता चरण सीस तिन नाये । अजर अमर के आशिष पाये ।।

रहे दनुज उपवन रखवारी। एक से एक महा भट भारी ।।
तिन्हैं मारि पुनि कहेउ कपीसा। दहेउ लंक कोप्यो भुज बीसा ।।
सिया बोध दै पुनि फिर आये। रामचन्द्र के पद सिर नाये ।।
मेरु उपारि आपु छिन माहीं। बाँधे सेतु निमिष इक माहीं ।।
लक्ष्मण शक्ति लागी जबहीं। राम बुलाय कहा पुनि तबहीं ।।
भवन समेत सुखेण ले आये। तुरत सजीवन को पुनि धाये ।।
मग महँ कालनेमि कह मारा। अमित सुभट निशिचर संहारा ।।
आनि सजीवन गिरिहिं समेता। धरि दीन्हा जहँ कृपा निकेता ।।
फनपति केर शोक हरि लीना। बर्षि सुमन सुर जय जय कीना ।।
अहिरावण हरि अनुज समेता। लै गयो तहँ पाताल निकेता ।।
जहाँ रहे देवी अस्थाना। दीन्ह चहै बलि काढ़ि कृपाना ।।

देव तनय प्रभु कीन्ह गुहारी। कटक समेत निशाचर मारी ॥
रीछ कीशपति सबै बहोरी। रामलखन कीने यह ठोरी ॥
सब देवतन की बंदि छुड़ाये। सो कीरति मुनि नारद गाये ॥
अक्षय कुमार दनुज बलवाना। सानकेतु कहँ सब जग जाना ॥
कुम्भकरन रावन कर भाई। ताहि निपाति कीन्ह कपिराई ॥
मेघनाद पर शक्ती मारा। पवन तनय सब सों बरियारा ॥
रहा तनय नारान्तक जाना। पल में हते ताहि हनुमाना ॥
जहँ लगि मान दनुज कर पावा। पवन तनय सब मारि नसावा ॥
जय मारुत सुत जय अनुकूला। नाम कृशानु शोक सम तूला ॥
जहँ जीवन कर संकट होई। रवि तम सम सो संकट खोई ॥
बंदि परै सुमिरै हनुमाना। संकट कटै धरै जो ध्याना ॥

यम को बाँध वाम पद दीन्हा । मारुत सुत व्याकुल बहु कीन्हा ।।
सो भुजबल का कीन कृपाला । आछत तुम्हें मोर यह हाला ।।
आरत हरन नाम हनुमाना । सादर सुरपति कीन बखाना ।।
संकट रहे न एक रती को । ध्यान धरे हनुमान जती को ।।
धावहु देखि दीनता मोरी । कहौं पवनसुत युग कर जोरी ।।
कपि पति बेगि अनुग्रह करहू । आतुर आइ दुसह दुःख हरहू ।।
राम शपथ मैं तुमहिं सुनाया । जवन गुहार लाग सिय जाया ।।
पैज तुम्हार सकल जग जाना । भव-बन्धन भंजन हुनमाना ।।
यह बंधन कर केतिक बाता । नाम तुम्हार जगत सुखदाता ।।
करौ कृपा जयजयजग स्वामी । बार अनेक नमामि नमामी ।।
भौमवार कर होम विधाना । धूप दीप नैवेद्य सुजाना ।।

मंगल दायक को लौ लावै। सुर नर मुनि वांछित फल पावै ॥
जयति जयति जयजयजग स्वामी। समरथ पुरुष सुअंतरजामी ॥
अंजनि तनय नाम हनुमाना। सो तुलसी के प्राण समाना ॥

दोहा–जय कपीस सुग्रीव तुम, जय अङ्गद हनुमान।
राम लषन सीता सहित, सदा करो कल्यान ॥
वन्दौं हनुमत नाम यह, भौमवार परमाण।
ध्यान धरै नर निश्चय, पावै पद कल्याण ॥
जो नित पढ़ै यह साठिका, तुलसी कहें विचारि।
रहे न संकट ताहि को, साक्षी हैं त्रिपुरारि ॥

इति हनुमान-साठिका समाप्त।

आरती बजरङ्गबली की

आरति कीजै हनुमान लला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।
जाके बल से गिरिवर काँपै। रोग दोष भय निकट न झापै॥
अंजनि पुत्र महा बल दाई। सन्तन के प्रभु सदा सहाई॥
दे बीरा रघुनाथ पठाये। लंका जारि सिया सुधि लाये॥
लंका-सो कोट समुद्र-सी खाई। जात पवन सुत बार न लाई॥
लङ्का जारि असुर सब मारे। सियाराम के काज सँवारे॥
लक्ष्मण मूर्छित परे धरणी पै। आनि सजीवन प्राण उबारे॥
पैठि पताल तोरि यम कारे। अहिरावण की भुजा उखारै॥
बायें भुजा असुर दल मारे। दहिने भुजा सन्त जन तारे॥
सुर नर मुनि आरती उतारें। जै - जै - जै हनुमानजी उचारें॥
कञ्चन थार कपूर ले आई। आरति करत अंजनी माई॥

जो हनुमानजी की आरती गावैं। सो बैकुण्ठ अमर पद पावैं ।।
लङ्का विध्वंस किये रघुराई। तुलसीदास स्वामी कीरति गाई ।।

इति बजरङ्गबली की आरती समाप्त।

श्रीहनुमत्-स्तवन

सोरठा– प्रनवउँ पवनकुमार, खल बन पावक ग्यानघन ।
जासु हृदय आगार, बसहिं राम सर चाप धर ।।

अतुलित-बलधामं स्वर्णशैलाभदेहं,
दनुजवन-कृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।
सकलगुण-निधानं वानराणामधीशं,
रघुपतिवरदूतं वातजातं नमामि ।।
गोष्पदीकृत-वारीशं मशकीकृत-राक्षसम् ।
रामायण-महामाला-रत्नं वन्देऽनिलात्मजम् ।।

अञ्जनानन्दनं वीरं जानकी-शोकनाशनम् ।
कपीशमक्षहन्तारं वन्दे लङ्काभयङ्करम् ।।

उल्लङ्घ्य सिन्धोः सलिलं सलीलं यः शोकवह्निं जनकात्मजायाः ।
आदाय तेनैव ददाह लङ्कां नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम् ।।

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ।।

आञ्जनेयमतिपाटलाननं काञ्चनाद्रि-कमनीय-विग्रहम् ।
पारिजात-तरुमूल-वासिनं भावयामि पवमान-नन्दनम् ।।

यत्र यत्र रघुनाथकीर्तनं तत्र तत्र कृतमस्तकाञ्जलिम् ।
वाष्पवारि-परिपूर्ण-लोचनं मारुतिं नमत राक्षसान्तकम् ।।

इति हनुमत्-स्तवन समाप्त ।

श्रीराम-स्तुति (१)

श्रीरामचन्द्र कृपालु भज मन हरण भव-भय दारुणम् ।
नवकंज-लोचन कंजमुख कर कंजपद कंजारुणम् ।।
कन्दर्प अगणित अमित छवि नव नील नीरज सुन्दरम् ।
पटपीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौमि जनकसुता-वरम् ।।
भजु दीन-बन्धु दिनेश दानव दैत्यवंश-निकन्दनम् ।
रघुनन्द आनन्दकन्द कोशलचन्द्र दशरथ-नन्दनम् ।।
सिर क्रीट कुण्डल तिलक चारु उदार अंग-विभूषणम् ।
आजानु भुज शरचापधर संग्रामजित खरदूषणम् ।।
इति वदति तुलसीदास शंकर शेष-मुनि-मन-रंजनम् ।
मम हृदय-कंज निवास कुरु कामादि-खलदल गंजनम् ।।

मनु जाहि राच्यो मिलहि सो बर सहज सुन्दर साँवरो ।
करुना निधान सुजान शील सनेह जानत रावरो ।।
एहि भाँति गौरि अशीश सुनि सिय सहित हिय हर्षित अली ।
तुलसी भवानिहिं पूजि पुनि-पुनि मुदित मन मन्दिर चली ।।

सोरठा –जानि गौरि अनुकूल, सिय हिय हर्ष न जात कहि।
मंजुल मंगल मूल, बाम अंग फरकन लगे ।।

इति श्रीराम-स्तुति समाप्त ।

श्रीराम-स्तुति (२)

भये प्रकट कृपाला दीनदयाला कौशिल्या हितकारी ।
हरषित महतारी मुनि-मनहारी अद्भुत रूप निहारी ।।
लोचन अभिरामं तनुघनश्यामं निज आयुध भुजचारी ।
भूषण बनमाला नयन विशाला शोभासिन्धु खरारी ।।

कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि बिधि करौं अनन्ता ।
माया गुण ज्ञानातीत अमाना वेद पुराण भनन्ता ।।
करुणा सुख सागर सब गुण आगर जेहि गावहिं श्रुति सन्ता ।
सो मम हित लागी जन-अनुरागी प्रगट भयउ श्रीकन्ता ।।
ब्रह्माण्ड निकाया निर्मित माया रोम-रोम प्रति वेद कहै ।
सो मम उरवासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै ।।
उपजा जब ज्ञाना प्रभु मुसकाना चरित बहुत विधि कीन्ह चहै ।
कहि कथा सुनाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै ।।
माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा ।
कीजै शिशुलीला अति प्रियशीला यह सुख परम अनूपा ।।
सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा ।
यह चरित जो गावहिं हरिपद पावहिं सो न परहिं भवकूपा ।।

इति श्रीराम-स्तुति समाप्त ।

भगवत्-स्मरणम्

हे राम ! पुरुषोत्तमा नरहरे नाराय़णा केशव़ा ।
गोविन्दा गरुडध्वजा गुणनिधे दामोदरा माधवा ।।१।।
हे कृष्ण ! कमलापते यदुपते सीतापते श्रीपते ।
वैकुण्ठाधिपते चराचरपते लक्ष्मीपते ! पाहि माम् ।।२।।

एकश्लोकीरामायणम्

आदौ राम-तपोवनादि-गमनं हत्वा मृगं काञ्चनं ,
वैदेही-हरणं जटायुमरणं सुग्रीव-सम्भाषणम् ।
बाली-निर्दलनं समुद्रतरणं लङ्कापुरी-दाहनं ,
पश्चाद्रावण-कुम्भकर्ण-हननं चैतद्धि रामायणम् ।।

इति एकश्लोकीरामायणं सम्पूर्णम् ।

भूत-प्रेत आदि समस्त विघ्न-बाधाओं को झाड़ने का मन्त्र

ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं स्फ्रें ख्फ्रें ह्सौं ह्स्ख्फ्रें ह्सौं ॐ नमो हनुमते महाबलपराक्रम मम परस्य च भूत-प्रेत-पिशाच-शाकिनी-डाकिनी-यक्षिणी-पूतना-मारी-महामारी-कृत्या-यक्ष-राक्षस-भैरव-बेताल-ग्रह-ब्रह्मग्रह-ब्रह्मराक्षसादिकजात-क्रूरबाधान् क्षणेन हन हन जृम्भय जृम्भय निरासय निरासय वारय वारय बन्धय बन्धय नुद नुद सूद सूद धुनु धुनु मोचय मोचय मामेनं च रक्ष रक्ष महामाहेश्वर रुद्रावतार हाहाहा हूंहूंहूं हुंहुंहुं घेघेघे हूं फट् स्वाहा।

प्रयोगविधि– श्रीहनुमान जी का मानसिक ध्यान कर भूत-प्रेत आदि बाधाग्रस्त रोगी पर उपर्युक्त मन्त्र को पढ़ता हुआ सरसों का दाना फेंकने से भूत-प्रेत-पिशाचादि से उत्पन्न सभी बाधाएँ शीघ्र नष्ट हो जाती हैं।

हनुमान-चालीसा का सम्पुट पाठ-विधान

किसी भी कार्य की सिद्धि के लिए श्रीहनुमान-चालीसा का सम्पुट पाठ विशुद्ध मन से संकल्प पूर्वक करना चाहिए। पाठ किसी मन्दिर या एकान्त स्थान में हनुमानजी का चित्र (फोटो) सामने रखकर करें। सामान्यतः जब तक कार्य सिद्ध न हो जाय, तब तक एक सम्पुट पाठ नित्य करना चाहिए।

शीघ्र फल-प्राप्ति हेतु ग्यारह सम्पुट पाठ प्रतिदिन करें। यह प्रयोग चालीस दिन का है। सम्पुट पाठ की चौपाइयाँ इस प्रकार हैं –

१–कुमति नाश एवं सुमति प्राप्ति के लिये–

महावीर विक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी।।

२–बल, बुद्धि और विद्या की प्राप्ति तथा मनोविकार दूर करने के लिए–

बुद्धिहीन तनु जानिकै, सुमिरौं पवन कुमार।
बल बुधि विद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस विकार।।

३–कठिन रोगों से मुक्ति के लिये–

राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा।।
लाय सजीवन लखन जियाये। श्रीरघुवीर हरषि उर लाये।।

अथवा

नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरन्तर हनुमत वीरा।।

हर प्रकार की पुस्तक मिलने का पता–

श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार

कचौड़ीगली, वाराणसी–१

मुद्रक–**भारत प्रेस,** कचौड़ीगली,वाराणसी।

हमारे यहाँ की प्रकाशित धार्मिक पुस्तकें मँगाकर अवश्य लाभ उठावें

पुस्तक	मूल्य
श्रीसूक्त– पुरुषसूक्त भा०टी०	१५)
शिवपुराण भाषा ग्लेज	२००)
चाणक्यनीतिदर्पण भा०टी०	२०)
रामायण मध्यम भा०टी०	२००)
रामायण मध्यम मूल दोहा चौपाई	७५)
वाल्मीकीय रामायण भाषा	२००)
अध्यात्म रामायण भा०टी०	२००)
आनन्द रामायण भाषा	२००)
राधेश्याम रामायण	४०)
भृगुसंहिता भाषा	१५०)
प्रेमसागर	६०)
श्रीमद् देवी भागवत भा०टी० सांची	६००)
श्रीमद्भागवत महापुराण भा०टी० साँची	५००)
सुखसागर भाषा मध्यम	२००)
दुर्गार्चन–पद्धति भा०टी०	१००)
दुर्गासप्तशती भा०टी० सजिल्द । मोटे अक्षरों में	६०)
दुर्गा सप्तशती भा०टी०	२५)
दुर्गा सप्तशती भाषा ग्लेज	२०)
दुर्गा सप्तशती ३२ पेजी मूल	२५)
दुर्गा सप्तशती ६४ पेजी मूल	२०)
दुर्गाकवच भा०टी०	८)
दुर्गा कवच ३२ पेजी मूल	३)
दुर्गा रामायण	३०)
गणेश सहस्रनाम भाषा टीका	३०)
मन्त्र–सागर भाषा टीका	७५)
बगलोपासनपद्धति–बगलामुख रहस्य भाषा टीका	४०)
दत्तात्रेय तन्त्र–भाषा टीका	२०)
उड्डीश तन्त्र भाषा टीका	२०)
रसराजमहोदधि पाँचों भाग	२००)
बृहत्पाराशरहोराशास्त्र भा०टी०	१००)
मानसागरी भा०टी०	१००)
जातकाभरण भाषा टीका	८०)
बृहज्ज्योतिषसार भाषा टीका	७५)
ताजिक नीलकण्ठी भाषा टीका	७५)
कर्मविपाक संहिता भाषा टीका	७५)
चमत्कार चिन्तामणि भाषा टीका	८)
भाव कुतूहल भाषा टीका	७५)
मुहूर्तचिन्तामणि भाषा टीका	६०)
लग्नचन्द्रिका भाषा टीका	४०)
घाघ–भड्डरी की कहावतें भा०टी०	२०)
विश्वकर्मा प्रकाश भाषा टीका	७५)
स्त्री जातक भाषा टीका	३०)
शीघ्रबोध भाषा टीका	२०)
शिव स्वरोदय भाषा टीका	२०)
प्रभुविद्या प्रतिष्ठार्णव	२५०)
कुण्ड निर्माण स्वाहाकार पद्धति	६०)
विष्णुयोग पद्धति भाषा टीका	२००)
विवाह पद्धति भाषा टीका	२५)
उपनयन पद्धति भाषा टीका	२५)
वाशिष्ठी हवन पद्धति भाषा टीका	२५)
गणपति प्रतिष्ठा पद्धति भाषा टीका	२५)
धनिष्ठादि पञ्चक शान्ति भा०टी०	२०)
संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत कथा भा०टी०	६०)
एकादशी माहात्म्य भाषा	१५)
कार्तिक माहात्म्य भाषा टीका	५०)
हनुमद्–रहस्य भाषा टीका	६०)
गायत्री–रहस्य भाषा टीका	६०)
बृहत्–स्तोत्र रत्नाकर बड़ा	७५)
रघुवंश महाकाव्य प्रथम सर्ग	१५)
हितोपदेश मित्रलाभ भाषा टीका	२०)
किरातार्जुनीयम् १–२ सर्ग भा०टी०	१५)
सोरठी बृजाभार १६ भाग	७५)

प्रकाशक – श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार, कचौड़ीगली, वाराणसी–२२१००१